बी. एड. द्वितीय वर्ष
सत्र - 2018 -2020
विषय - स्कूल प्रबंधन एवं नेतृत्व
यूनिट - 2 (c)
<u>प्रकरण - विद्यालय छात्रावास</u>
व्याख्यान सं. - 09

डॉ. अमोद कुमार सिन्हा
सहायक प्राध्यापक,
शिक्षा शास्त्र विभाग,
AND कॉलेज,
शाहपुर पटोरी, समस्तीपुर

Continued from the previous class

<u>छात्रावास की स्थिति, भवन एवं साज-सज्जा</u>

6. **अन्य कक्ष (Other Rooms) :** -उपर्युक्त कक्षों के अतिरिक्त विद्यालय छात्रावास में सामान रखने तथा नौकरों के निवास के लिए भी कक्षों की भी व्यवस्था होनी चाहिए।

इन समस्त कक्षों में प्रकाश एवं शुद्ध वायु की उपयुक्त व्यवस्था के अतिरिक्त उपयुक्त सामग्री का होना आवश्यक है। उदाहरणार्थ - प्रत्येक छात्र के लिए उसके शयनागार कक्षा में खाट, मेज, रैक तथा अलमारी का प्रबंध उनकी आयु व आवश्यकताओं अनुसार होना चाहिए। खाने के कमरे में उपयुक्त सामग्री - आसन तथा चौकी या कुर्सियाँ तथा मेजें होनी चाहिए। स्नानगृहों में साबुन रखने, कपड़े टाँगने आदि सभी बातों के लिए उचित व्यवस्था की जानी चाहिए। शौचालयों में यदि संभव हो तो फ्लश का प्रबंध किया जाए। इस सुविधा के प्राप्त होने से स्वच्छता की समस्या बहुत सरल हो जाती है।

<u>छात्रालयाध्यक्ष एवं उसके कर्तव्य</u>

शिक्षा के साधन के रूप में छात्रावास की उपयोगिता पर्याप्त सीमा तक छात्रालयाध्यक्ष के व्यक्तित्व,उसके गुणों तथा योग्यताओं पर निर्भर है। छात्रालयाध्यक्ष संपूर्ण पद्धति की धुरी है। इसी के द्वारा छात्रावास के अच्छे या बुरे चरित्र का निर्धारण होता है। बज बालक छात्रावास में प्रवेश लेता है तब वह अपरिपक्व होता है। एक बालक को समाज उत्तरदायी सदस्य बनाने तथा सामूहिक जीवन व्यतीत करने योग्य बनाने के लिए छात्रालयाध्यक्ष के ऊपर बहुत बड़ा दायित्व रहता है। उससे यह अपेक्षा की जाती है कि वह उनको उत्तरदायी नागरिक बनाने के लिए सतत प्रयत्न करे। इसके अतिरिक्त छात्रालयाध्यक्ष ही छात्रावास की संपूर्ण व्यवस्था एवं उसमें उत्तम अनुशासन हेतु अंततः उत्तरदायी होता है। सामान्यतः इस कार्य का भर विद्यालय के किसी अध्यापक को सौंप दिया जाता है। इसके बदले उसके शिक्षण कार्य में कुछ कमी कर दी जाती है।

इस व्यवस्था को अधिक उपयोगी बनाने में विद्यालय के अन्य शिक्षक छात्रालयाध्यक्ष को सहायता दे सकते हैं। छात्रालयाध्यक्ष छत्रावास की व्यवस्था का नियंत्रण एवं निरीक्षण करने के साथ विद्यालय में भी कार्य करता है, इसलिए उसको सहायता मिलनी ही चाहिए क्योंकि उनके सहयोग से वह अपने दायित्वों को पूर्ण करने में अधिक समर्थ हो सकेगा।

छात्रालयाध्यक्ष को विद्यालय-छत्रावास की समस्त व्यवस्थाओं का निरीक्षण एवं नियंत्रण करना है। विद्यालय छात्रावास की कोई क्रिया उसकी दृष्टि से ओझल नहीं होनी चाहिए। यदि छात्रावास को घर का रूप ग्रहण करना है तो उसे बालकों के अभिभावकों का स्थान लेने के लिए भरसक प्रयास करना चाहिए और उसे माता-पिता की भाँति सर्वोत्तम प्रकार का पथ-प्रदर्शन, सहायता एवं परामर्श प्रदान करना चाहिए। छात्रालयाध्यक्ष छात्रों के लिए छात्रावास में आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करनी चाहिए जो कि उन्हें घर पर प्राप्त हो सकती हैं। हर संभव उपाय से छात्रावास के जीवन को पारिवारिक जीवन दें का प्रयत्न करना चाहिए।

छात्रालयाध्यक्ष के गुण

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर हम कह सकते हैं कि छात्रालयाध्यक्ष के कन्धों पर छात्रावास के अनुशासन, उसकी व्यवस्था तथा निरीक्षण आदि सभी कार्यों का भार है। इस पद के दायित्व का निर्वाह करने वाले व्यक्ति में कुछ विशिष्ट गुणों का होना आवश्यक है, नीचे संक्षेप में उनपर प्रकाश डाला जा रहा है:-

1. **प्रशासकीय योग्यता(Administrative Ability) :-** छात्रावास में सुव्यस्थिा स्थापित करने के लिए छात्रालयाध्यक्ष को कुशल संगठनकर्ता एवं प्रबंधक होना चाहिए।

2. **सामाजिक गुण (Social Quality) :-** छात्रालयाध्यक्ष में सहयोग, सहानुभूति, न्यायप्रियता आदि गुणों का होना आवश्यक है, जिससे वह बालकों के लिए छात्रावास में सहयोगी वातावरण निर्मित कर सके। इसके अतिरिक्त उसे मृदुभाषी, धैर्यवान, निष्पक्ष व्यवहार करने वाला व्यक्ति होना चाहिए।

3. **व्यक्तित्व (Personality) :-** छात्रालयाध्यक्ष में उन गुणों का होना आवश्यक है जो एक उत्तम व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। उदाहरणार्थ - नेतृत्व करने की क्षमता, उच्च चरित्र, सहनशीलता एवं स्पष्ट चिंतन, निष्पक्षता एवं दूरदर्शिता आदि। उसमें वातसल्य भाव का होना भी परम आवश्यक है जिसके अभाव में वह छात्रावास में पारिवारिक जीवन की पूर्ति नहीं कर सकता।

4. **मानवीय दृष्टिकोण (Humanitarian Outlook) :-** छात्रालयाध्यक्ष मानव-प्रकृति की विशेषताओं एवं मानवीय संबंधों को समझने की क्षमता होनी चाहिए। इसके अभाव में वह छात्रों एवं उनके अभभवकों तथा शिक्षकों आदि से उचित संबंध स्थापित करने में असमर्थ रहेगा। इसके अतिरिक्त उसे उदार दृष्टिकोण रखना चाहिए। उसमें छात्रों की योग्यता एवं शक्ति में निष्ठा रखने की क्षमता भी होनी चाहिए। मानव-प्रकृति को समझने के लिए उसे मनोविज्ञान का ज्ञान भी होना चाहिए।